श्री कृष्ण जन्म
एवं

~~श्री कृष्ण की~~ नन्दोत्सव लीला

श्री कृष्ण के जन्म के उपलक्ष्य में ब्रज में मनाया जाने वाला ये उत्सव है जो कि हर घर में मनाया जाता है।

मथुरा में कंस के कारागार में भगवान विष्णु ने कंस के अत्याचारों से अपने भक्तों को बचाने के लिए देवकी के गर्भ से श्री कृष्ण के रूप में अवतार लिया परन्तु कंस के द्वारा अपने आठवें पुत्र को मृत्यु से बचाने के लिए वासुदेव जी श्री. कृष्ण को सूप में रख कर यमुना जी को पार कर नन्द बाबा के यहाँ गोकुल लेकर पहुँचे तथा सोती हुई यशोदा के समीप उन्हें लिटा कर उनके यहाँ पैदा बेटी (योगमाया देवी) को साथ लेकर वापस आ गये। दूसरे दिन प्रातः सभी को यह मालूम पड़ा कि नन्दबाबा के यहाँ एक पुत्र रत्न ने जन्म लिया है। सभी गोप-ग्वाले आपस में चर्चा करने के उपरान्त बधाई देने के लिए बाबा के भवन में धीरे-धीरे पहुँचने लगें। वहीं ब्रजगोपियाँ पानी भरने, स्नान करने नदी तट पर पहुँची। वहाँ उन्होंने ये चर्चा सुनी वे भी दौडती हुई नन्दरानी को बधाई देने पहुँची। देवताओं में भी देवलोक तक श्री कृष्ण जन्म की चर्चा थी। ये चर्चा नारद जी ने शिव जी को जाकर बताई तो वे भी भगवान के बाल रूप के दर्शन का लोभ छोड नहीं सके व समाधि से उठकर गोकुल की ओर चल पडें। नन्दभवन पहुँच कर माँ को आवाज दी। यशोदा भी उनके विकराल रूप को देख कर डर गई। उन्होंने कहा जब मुझे डर लग रहा है तो बाल कृष्ण तो बच्चा है वे तो और भी भयभीत हो जायेंगे अत हे बाबा मैं तुझे अपने लाला के दर्शन नहीं कराऊँगी। शंकर जी वहीं धूनि लगा कर बैठ गये कि मैं बिना दर्शन करे नहीं जाऊँगा। यशोदा जी किवाड बंद कर अदरं बैठ गई। तब श्री कृष्ण ने भगवान शंकर की पुकार को सुना और मुस्कुराने लगे। जब यशोदा माँ ने उन्हें दूध पिलाने का प्रयास किया तो उन्होंने दूध नहीं पिया तथा जोर-जोर से रोने लगे। तब माँ ने सोचा कि उसी बाबा ने कुछ जादू-टोना किया है। वे बाल कृष्ण को लेकर शंकर भगवान के पास बाहर आई। और श्री कृष्ण को ठीक करने के लिए कहा। भगवान के बाल रूप के दर्शन पाकर शंकर भगवान अति प्रसन्न होकर नृत्य करने लगे तथा उन्हें नृत्य करते देख बाल कृष्ण प्रसन्न होकर किलकारी मारने लगे। शिव जी प्रसन्न होकर वापिस अपने धाम चले गये।

पाँच लीला

1. सुरक्षा चरित्र
2. उद्धव लीला
3. होली लीला
4. श्री कृष्ण जन्मोत्सव
5. शिव लीला

श्री कृष्ण की नन्दोत्सव लीला

श्री कृष्ण के जन्म के उपलक्ष्य में ब्रज में मनाया जाने वाला ये उत्सव है जो कि हर घर में मनाया जाता है।

मथुरा में कंस के कारागार में भगवान विष्णु ने कंस के अत्याचारों से अपने भक्तों को बचाने के लिए देवकी के गर्भ से श्री कृष्ण के रूप में अवतार लिया। परन्तु कंस के द्वारा अपने आठवें पुत्र को मृत्यु से बचाने के लिए वासुदेव श्री कृष्ण को सूप में रख कर यमुना जी को पार कर नन्द बाबा के यहाँ गोकुल ले कर पहुँचे तथा सोती हुई यशोदा के समीप उन्हें लिटा कर उनके यहाँ पैदा बेटी योगमाया देवी को साथ ले कर वापिस आ गये। दूसरे दिन प्रात सभी को यह मालूम पडा कि नंद बाबा के यहाँ एक पुत्र रत्न ने जन्म लिया है।

राधा जी की कचहरी
राधा रानी का न्यायालय

समाजी– जय जय श्री राधा रमण, जय जय नवल किसोर,
जय गोपी चित्त चोर प्रभु, जय जय माखन चोर,
या अनुरागी चित्त की गति समुझे नहीं कोय,
ज्यों–ज्यों बूढे श्याम में त्यों–त्यों उज्जवल होए,
लाडली लकन वर गाइए, श्री ब्रजराज कुमार वर गाइए,
भक्तन को मन भामतो गाइये, श्री राधा कृष्ण चरण कमलेयो नमः।

भगवान कृष्ण का प्रवेश ग्वालों को पुकारते हुए

कृष्ण– अरे ओ भैया मधुमंगल, अरे रैंदा पैंदा काहॉ हौ भैया।
सखा– आये भैया आये अरे भैया राम–राम।
कृष्ण– प्रसन्न रहौ।
सखा– कह भैया कैसे याद किये कहा बात है।
कृष्ण– अरे भैया मधुमंगल, आज तौ माखन की चोरी करिवै उॅचे गॉव चलैं। और देख भैया अब तौ दिनउ निकर आयौ है सखी तौ दही बेचवे गई हुंगी सूनी बाखर मिलेगी।
सखा– हॉ भैया कहतो तू ठीक रहयौ है चल चलें।
गाते हुए।
गीत– हम तो ब्रज के हैं ग्वाल मस्त मंसुखा लाल
हमरे साथी गोपाल दोउ खेलें संग–संग
उॅचे गॉव में प्रवेश।

घर में घुस के छींके से मटकी उतार कर माखन खाना इतने में ही दो गोपियों का प्रवेश

सखी– अरे लाला आज तो तुम रंगे हाथ पकरे गये हो अब तुम्हें नाय छोडूंगी और किसोरी जू के पास लै जाउॅगी।
कृष्ण– नाय–नाय सखी आज छोड दे। अब मैं कबउ तेरे घर नाय आउॅगो।
सखी– अजी मेरे यहॉ नाय आओगे पर काउ और सखी के यहॉ जाओगे।
कृष्ण– नाय सखी अब तो मैं जा गॉम की तरफ भी नाय देखूंगो।
सखी– दूसरी सखी से अरी अब नाय छोडेंगे।
गीत– अब कहॉ जायेगो रे लीन्हों श्याम पकरि कै,
चरम कलैया हरि की पकरी, पकरि जैहि सम्हर कै,
मोहे देख भोरो बन बैठो, खाय लै नीयत भरके
क्यों सरमा गयौ रे लीन्हों श्याम पकरि कै।

राधा रानी के पास ले जाती हैं, दरबार लगा है अष्ट सखी साथ है।
दो सखी चोबदार की तरह आवाज दे रही हैं।

सखी– सावधान, सावधान वृन्दावनेश्वरी पूजनीया श्री राधारानी राज सभा में पधार रही हैं। सावधान
राधा– प्रधानमंत्राणी जी
ललिता– आज्ञा सामाश्री जी
राधा– आज अपने श्री धाम के कोई विशेष समाचार हैं।

ललिता– नहीं महारानी जी आपकी दया से सर्वत्र सुख–शांति है। सभी आपकी जैजै कार कर रहे हैं।

द्वारपालिका– महारानी जी की सदा जैजैकार रहे।

राधा– क्या कहना चाहती हो द्वारपालिका।

द्वारपालिका– महारानी जी दुःखी ब्रजगोपी आपके समक्ष अपना आवेदन प्रस्तुत करना चाहती है।

राधा– कहॉ हैं वे सब।

द्वारपालिका– प्रवेश द्वार पर।

राधा– उन्हें मेरे समक्ष ले आओ।

द्वारपालिका– जो आज्ञा महारानी।

गोपी– स्वामिनी जू दुहाई है।

राधा– तुम्हें क्या दुख है सखी। किसने तुम्हें दुःखी किया।

गोपी– यशोदा नंदन ने ।उन नंदराय जी के लाडले लाल कृष्ण चंद्र ने राज्य भर में बडौ उधम मचा रखौ है। वाट घाट घर गैल में ये युवतियों को छेडते हैं। जब कोई गोपी दही दूध की मटकी लेके जावै है तो यह स्वयं को वहॉ का सम्राट बताकर उससे कर मांगते हैं और जब वह विरोध करती है तो उसकी मटकी फोड देते हैं। इतना ही नहीं जे अपनी चंचलता प्रदर्शित करते हैं और मोहक मुस्कान और मद भरे नेत्रन ते हृदय धन लूट कर ठाठ से चल देते हैं।

राधा– ऐसी धृष्टता करते यह तो फिर मेरे राज्य में सुख शांति कहॉ हुई। क्या इनकी मॉ यशोदा रानी तथा नंदबाबा इनकी इस चंचलता पर इन्हें दण्ड नहीं देते। वे दोनों तो बडें सज्जन हैं।

गोपी– हे स्वामिनी जी जे तो अपने माता–पिता के दुलारे हैं।

राधा– तो इससे क्या हुआ। कोई गोपी पकड कर इन्हें इनके माता–पिता के पास दण्ड दिलाने नहीं ले जाती। यशोदा जी तो बडी न्याय प्रिय हैं ऐसा मैने सुना है।

गोपी– ले तो जायें पर ये बडे मायावी हैं। जे नंदभवन तक जाते–जाते कितने रूप बदल लें। तो यशोदा जी उसी गोपी को लांछित कर भगा देती हैं। हे स्वामिनी जी बडी मुश्किल से आज मेरा दांव लगा और मैं इन्हें पकड लाई अब आप ही मेरा न्याय करौ।

राधा– हॉ सखी मैं न्याय करूंगी तुम निश्चिंत रहौ। हमारे राज्य में किसी का अत्याचार नहीं चलेगा। यशोदा नंदन जी को मैं यथाशक्ति सुधारने का प्रयत्न करूॅगी। तुम अपने आरोपों का वाद लिखित रूप में प्रस्तुत करौ।

सखी– आवेदन बढाते हुए उसे भी लिख कर ले आई हूॅ।

राधा– आवेदन लेते हुए प्रधानमंत्री जी इस याचिका को अपने पास सावधानी से रखौ और पुलिस अधीक्षका को पूर्ण प्रकार से सतर्क कर दो कि वे इस नटखट को भली प्रकार पहचान लें।

राधा कृष्ण की ओर मुखरित होते हुए

राधा– हे श्याम सुन्दर आपने इस ब्रजगोपी के सब आरोप भली प्रकार सुन लिये न।

कृष्ण– हॉ किसोरी जी।

राधा– आपकू कछु कहनौ है।

कृष्ण– मैं समस्त आरोपों का खण्डन करता हूॅ जो मेरी शिकायत लाई हैं वो स्वयं अपराधी हैं।

राधा– तो वादी व प्रतिवादी अपने विधिवक्ताओं व साक्ष्यों समेत अपने स्पष्टीकरण आगामी शनिवार को प्रस्तुत करें।

कार्यवाही स्थगित की जाये अगलेवार

ललिता– वादिनी तथा प्रतिवादी दोनों अपने–अपने साक्षियों के नाम मुझे तुरंत बतायें।

गोपी– प्रथम साक्ष्य हैं राजा मयूरध्वज निवासी सत्यलोक द्वितीय हैं पाताल के सम्राट राजा बलि तृतीय हैं ब्रजगोपी।
देख लिया न अर्थात आकाश, पाताल व पृथ्वी तीनों लोकों के निवासी मेरे पक्षपाती हैं। आप भी अपने पक्षपाती के नाम लिखा दो।

कृष्ण– अजी मैं अपने पक्ष के लोगों को क्यों सामने लाउँ सब शनिवार को आ जायेंगे।

कृष्ण चारों वेदों से समक्ष

कृष्ण– अखिल लोकनायक प्रभू आपकी जय हो।
वेदगण तनिक मन्दस्वर में बोलो।

वेद– ऐसी क्या बात है जो आपने हम सब का आह्वान इस समय किया।

कृष्ण– एक ब्रजगोपी ने किसोरी जी के समक्ष वाद प्रस्तुत किया है कि कृष्ण चरित्र संदिग्ध है। इसमें तुम चारों को मेरे विधि प्रवक्ता का काम करना होगा।

वेद– प्रभू आपकी लीला अपरम्पार है आपकी कृपा से सब पार हो जायेगा।

कृष्ण– अब सब जाओ आगामी शनिवार को न्यायालय में उपस्थित होना।

वेद– जो आज्ञा।

दरबार

राधा– प्रधानमंत्राणी जी सखी के विपक्ष के व पक्षपाती व विधिवक्ता आदि आ गये

ललिता– जी श्री स्वामिनी जी सब उपस्थित हैं।

राधा– तो क्या आरम्भ हो। प्रतिवादी तुम पर जो आरोप लगे वे स्वीकार हैं।

कृष्ण– मैं सभी आरोपों का खण्डन करता हूँ। वास्तविकता तो यह है कि मैं भक्त की टेर पर स्वयं नियंत्रण नहीं रख पाता। आपकी जनता ही प्रतिपाण मुझे टेरा करती हैं जिसकी टेर पर मैं अपना विश्राम त्याग कर उसे सुखी करने हेतु प्रयास करता हूँ। अजी मैं तो आपके भय से सदा भयभीत रहता हूँ।

राधा– उपस्थित सज्जनों प्रतिवादी ने तो अपना स्पष्टीकरण प्रस्तुत करके स्वयं को निर्दोष घोषित किया है अब दोनों ओर के पक्षपातियों के स्पष्टीकरण तथा तर्क श्रवण करके ही न्याय घोषित होगा।

राजाबलि– मैं ईश्वर की सौगन्ध खाकर कहता हूँ जो कुछ कहूंगा सत्य कहूंगा। मैं पाताल लोक का महाराज बलि हूँ। कई वर्ष हुए मैं रेवा नदी के तट पर यज्ञ कर रहा था यह छलिया छोटे से रूप में नन्हें–नन्हें तीन पग भूमि की याचना की जिसके लिए मैंने वचन दे दिया। इसने मुझे ऐसा छला कि मेरा शरीर भी नाप डाला तब भी भूमि पूरी न हुई। तब इसने पाताल पहुंचा कर वहाँ का राज्य सौंप दिया व मेरे राज्य भवन के द्वार पर स्वयं विराज रहा है तथा उस स्थिति में वहाँ रहेगा जब तक अपना दान पूरा न कर दूँ है न इसका छल और अत्याचार।

सामवेद– सत्य–सत्य बताना कि इसी रूप में कृष्ण ने तुमको छकाया।

बलि– नहीं।

सामवेद– श्री सामवेद बलि के उत्तर को अंकित किया जाये।
बलि की ओर घूमकर
हॉ राजा तुमको पाताल लोक दोनों राज्यों के बदले दिया।

सामवेद– तुम्हारे दान पूर्ण न करने पर भी उन्होंने वह सम्मान प्रदान कर तुम पर कपट की वर्षा की।

बलि– हॉ सामवेद।
और क्या अन्याय किया।
प्रतिपल मेरे द्वार पर उपस्थित रह कर ये दर्शन देते हैं।

साम– स्वामिनी जी धृष्टता की भी कोई सीमा होती है पहले तो कृष्ण ने उस रूप में दान ही नहीं लिया यदि इसे भी माना जाये तो इसमें भी ईश्वर की बडी कृपा है कि घमण्ड में चूर हो कर इन्होंने न तो अपने गुरू शुकाचार्य की आज्ञा का पालन किया न ही दान पूरा किया फिर भी डनको इन कृपालु वामन में असीम राज्य दिया संग–संग अपने अमोघ दर्शन भी देते हैं। कृप्या अपने न्यायार्थ राजा बलि की इस अकृतज्ञता को अंकित करें।

ललिता– द्वितीय पक्षपाती मोरध्वज को उपस्थित करें।

मोरध्वज– सामाझी सच कहूँगा। मैं सत्य लोक का वासी हूँ इन्होंने साधू वेश धारण कर मेरे पुत्र को आरी से दो हिस्सों में कटवाया फिर दायें भाग को शेर को खिलवाया बॉया भाग स्वयं मुझसे पकवाकर परोसने एवं खाने को कहा फिर मुझसे ही मेरे पुत्र को पुकारने को कहा तब जाकर अपने दर्शन दिये है न इसमें इनका छल।

राधा– अच्छा तो मोरध्वज जी आप बैठो गोपियां कृष्ण को दोषी प्रमाणित करें।

गोपी– हे स्वामिनी जी कहॉ तक अन्याय व अत्याचार करें ये तो नित्य नये अत्याचार करें। किसी के घर में चुपके से माखन खाते हैं। बंदन को खवावै, कभी मटकी फोडें, कभी दान लें, कभी आधी रात में बंशी बजाके हमें यमुना तट पे आने को वाध्य करें व फिर अर्न्तध्यान हो जायें।

ऋग्वेद– हे ब्रज गोपियों तुमने अपने बयान में लिखा है कि मैया के समक्ष जाने पर भवन के भीतर ते निकरे इससे स्पष्ट है वे अपने भवन में हैं।
रसिक दासी दही भीग गई तो उसी दंशा में अपने घर गई।

सखी– नहीं मेरी तो मटकी तथा वस्त्र पूर्व की भॉति हो गये थे और उस दिन मेरा दही भी दुगने मूल्य पर बिका।

मृग– हॉ तो कृष्ण ने बंसी तो वन में बजाई थी तुम सबको बुलाया तो नहीं था।

सखी– नाय तो।

कृष्ण– जब तुम सब वहॉ पहुँची तो तुम्हें लौट जाने को कहा या नहीं कहा था।

सखी– हॉ।

वेद– राधा जी आप इन्हीं के कथन से इन्हें निरपराध अंकित कर लें। रही स्नान के समय वृक्ष पर वस्त्र उठा कर चढने की बात उसकी वास्तविकता का पता भी चल जायेगा। तो ब्रजबालाओं स्नान करते समय तुम नग्न थीं।
कृष्ण ने तुम्हें जल से बाहर नग्न निकाल कर वस्त्र दिये।

सखी– हॉ।

वेद– उससे पहले तुम्हें कुछ समझाया।

सखी– यही समझाया कि जल में वरूण देवता का वास है, हमें पूर्ण नग्न होकर उसमें स्नान नहीं करना चाहिए। बाहर नग्न निकाल कर वह दोष विलीन हो जायेगा।

वेद– इसमें कृष्ण का क्या अपराध है देख लें स्वामिनी जी।

राधा– वादिनी तुम्हें कुछ और कहना है।

सखी– हॉ जी इन्होंने मार्ग में आपके समक्ष अपना विरोध प्रस्तुत न करने की प्रार्थना की थी।

राधा– प्रमाण।

सखी– मैं स्वयं।

अर्थहीन–जाओ अपने–अपने स्थान ग्रहण करो।

श्रीकृष्ण हर प्रकार निर्दोष हैं। उन्होंने हर प्रकार से भक्तों के कष्टों को दूर करने का प्रयास किया है। गोपियॉ स्वयं उन्हें उधम मचाने को विवश करती हैं। यदि वस्त्र गीले हो गये तो गोपी बाजार कैसे गई। माखन फैल गया तो बेचा कैसे। समस्त साक्ष्यों के आधार पर यह साबित होता है व निर्णय लिया जाता है श्री कृष्ण पूर्णतया निर्दोष हैं। यह वाद मिथ्या अपवाद है कृष्णा बरी किया जाता है।

गीत– राधेरानी बनी हैं कोतवाल मुरारी पकरे गये।

राधे तो कोतवाल बनी हैं
बन गई विसाखा थानेदार
सब सखियॉ बन गई सिपाही
ललिता बनी हैं सूबेदार
माखन की चोरी में पकरे गये हैं
जाकी ढूँढे यशोदा माय
ग्वाल वाल सब देत गवाही
खुशी भये हैं नन्दलाल

वृन्दावन में खुली है कचहरी
हाजिर भये गोपाल
न्यायालय में चला मुकद्मा
बरी भये हैं नन्दलाल

ललिता– श्रीकृष्ण निसंदेह परात्पर पूर्ण परमेश्वर हैं जो प्रेमावाहन से अपने रूप को गुप्त रख कर वृन्दावन धाम मेरे नर रूप में विचरण कर रहे हैं। भगवान होने के कारण उनमें दिव्य गुण, असीम उदारता, अगाध कृपा विद्यमान है जिनसे वह समस्त विश्व पर अपनी दृष्टि रखते हैं। ये पूर्ण काम है इनकी अपनी कोई इच्छा नहीं है। अपने प्रेमियों व भक्तों के वशीभूत होकर ही अपनी इच्छानुसार अनेक रूप धारण करते हैं।

सूत्रधार

जब–जब अधर्म बढत है, बाढे अत्याचार। तब भू–भार उतारने, ब्रहम लेत अवतार।।
द्वापर में जब कंस ने कियो बढो अभिमान। कृष्ण कन्हैया नै लियौ जन्म जेल दरम्यान।।
भक्ति प्रेम स्थापना भक्तन के सुख काज। आये तज गोलौक सौं ब्रज में श्री ब्रज राज।।
प्रभु सौ पहले ब्रज में आय गये सुर–वृन्द। उदित भयी आनन्दमयी निरखैं आनन्द कन्द।।
नन्दोत्सव ऐसौ भयौ, ब्रज गोकुल के माही। ऐसौ उत्सव जगत में दूजौ दीखत नाहीं।।

प्रथम दृश्य

सुबल– अरे मधुमंगल, तैने कोई बात सुनी है का।

मधुमंगल– अरे भाई देख लाला सुबल, सुनैगौ वो जाकी दब रई होयगी। और देख हम तौ वैसे भी पंडित के बेटा हैं, हम सुनै नाय हम तौ सुनावै।

सुबल– अरे पंडित के तेरे सुनायवे और या बात में बडौ भेद है।

मधुमंगल– अच्छौ तौ या भेदै तुही बता पर इतनौ जान लीजियो कै तेरे या भेद में कोई छेद निकरौ तौ तेरी खैर नाय चौं सबेरे–सबेरे टोक कै जो तैने अनैट करी है वाकौ सिगरौ बलदौ लै लूँगो।

सुबल– नन्द बाबा के लाला भयौ है।

मधुमंगल– का कई, का कई, का कई नन्द के लाला भयौ है, अरे सुबल तू नहीं जानै ये मधुमंगल पंडित जी की मूर्ति कोउ नई नाय। देख हमनै त्रेताउ देखौ, हमनै द्वापर देखौ, हमनै सतयुग देखौ पर हमनै तौ भइया जब देखी, जब सुनी, जब जानी तब जेई जानी कै मातान् के लाली–लाला होयौ करैं। जे कौन सौ युग आ गयौ कै मातान् के बन्द है गये और पुरूषन् के चालू है गये।

सुबल– अरे गंवार पंडित कौ छोरा बनै इतनौउ बुद्धि नाय रखै। अरे मूर्ख, लाला तौ जसोदा के भयौ है पर नाम तौ नन्द कौ ही चलैगौ नाय।

मधुमंगल– हॉ ये बात तौ सॉची कह रह्यौ है, देखौ भइया नन्द के घर नौ लाख तौ गइया हैं, 85 चौक कौ विशाल भवन, जामें सैंकडन मथानी मथी जायें, काउ बात की भइया कमी नाय। कमी हती तौ केवल एक बाल गोपाल की सो नारायन नै वा कमी कू भी पूरौ कर दियौ। तौ छोराओ देख का रहे हो ऐसौ करौ जल्दी से तौ स्नान कर लियो, पीरे–पीरे वस्त्र पहन लेओ, कमर ते फैंटा बॉध लेओ, मूँढ ते साफौ बॉध लेओ, ऑखन में मोटो–मोटो काजर लगा लेओ और भइया एक–एक पान कौ बीडा चबा लेओ। और फिर चल रहे हैं नन्दभवन में खूब तौ भइया बधाई दिंगे और खूब भइया बधाई

सखा– लिंगे

मधुमंगल– हॉ लैवे के नाम पै देखौ कैसी जोर से कह रह्यौ है लिंगे, तू चौं ना बोलैगौ दारी के, चलौ भइया चलौ।

सब– चलौ भइया चलौ, चलौ, चलौ।

दूसरा दृश्य

सखी 1– अरी सखी आज सिगरी गोपी इकट्ठी हैके कहॉ कू जाय रही हैं।

सखी 2– हम सब तौ नन्दभवन जाय रही है यशोदा के लाला भयौ है वाकी बधाई दैवे।

सखी 1– हॉ मैंनेउ जमुना जी पै जेई बात सुनी है सो मैं घर जावे की बजाय सूधी नन्दभवन जाय रही हूँ बधाई दैवे। तौ चलौ सब बधाई दैवे नन्दभवन कू चलै।

गीत– जसोदा जायो ललना मैं जमुना पै सुनि आई।

सूत्रधार– पूत–सपूत जन्यौ जसोदा, इतनी सुनि कै वसुधा सब दौरी।
देवन मन आनन्द भयौ, सुन गावत ध्यावत मंगल गौरी।
नन्द कछु इतनौ जो दियौ, घनश्याम कुबेरहु की मति बौरी।
मोई देखत ब्रज ही लुटाई दियौ, ना बची बछिया छछिया ना पिछौरी।

तृतीय दृश्य

सखा 1– नन्दबाबा बधाई है।

सखा 2– अरे नन्द राय जी बधाई है।

सखा 3– नन्दराय जी बधाई है।

सखा 4– नन्दबाबा बधाई हो।

नन्दबाबा– हॉ भइया आप सब कू भी बधाई है। आओ भइया खूब नाचो, गाओ, मंगल मनाओ आज बडौ शुभ दिन है । आओ भइया।

सखी 1– अरी मइया बधाई हो बधाई।

सखी 2– हॉ मइया तोकू बधाई हो बधाई।

यशोदा– बधाई हो बहनाओं बधाई हो, तुम सबन कू बधाई हो। और देखौ जे लाला तौ तुम सब ब्रजवासिन के आशीर्वाद से भयौ है। जे सबन कौ लाला है। और देखौ ऐसे बधाई देवे से काम नाय चलैगो। कछु गाओ, कछु बजाओ, कछु मंगल करौ तभी बधाई मानी जाएगी।

गीत– अरे यहॉ नाच रहे नर–नार गॉव गोकुल मे।

सखी 1– अरी सखियों देखौ जसोदा मइया कैसे अपने लाला कू चाव ते पलना में झुला रही है।

गीत– पलना में ललना झुलावें।

गीत– जसोदा जी से हॅस–हॅस पूछे दाई।

सूत्रधार– नन्द के आनन्द भयौ सम्पत्ति अटूट दीनी,
मोतिन के खत्ता पै सबकी नजर डट गई,
ज्वार जान जसोदा जवाहर लुटान लगी,
लेत–लेत–लेत–लेत लैन हारी नट गई,
बूढौं सौ याचक ना आन पायौ भीड माही,
सो तौ कहैं हाय दइया केती दृव्य लुटाय दई,
हाथी दीने, घोडा दीने और दीनी पालकी,
लेन–देन देख कै कुबेर की छाती हू फट गई।

गीत– नन्द के आनन्द भये जय कन्हैया लाल की।

सूत्रधार– जय ब्रजेश, मथुरेश जय, जय गोकुल के चन्द।
उदय होत भूतल कियौ, दिस–दिस पूर्णानन्द।।